**SHODH SAMAGAM**

**ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)**

# सीकर शहर में विज्ञान एवं कला संकाय के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निर्देशन संबंधी सेवाओं की आवश्यकता का अध्ययन

**विनोद कुमार सैनी,** शोधार्थी, शिक्षा विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत
**निरंजन लाल,** शोधार्थी, शिक्षा विभाग
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

**ORIGINAL ARTICLE**

**Authors**
विनोद कुमार सैनी,
निरंजन लाल

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 06/04/2023
Revised on : -----
Accepted on : 13/04/2023
Plagiarism : 00% on 06/04/2023

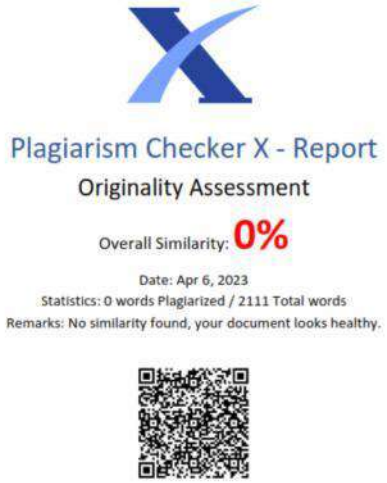


## शोध सार

*प्रस्तुत शोध पत्र सीकर शहर में विज्ञान एवं कला संकाय के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निर्देशन संबंधी सेवाओं की आवश्यकता का अध्ययन से सम्बन्धित है। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निर्देशन संबंधी सेवाओं की आवश्यकता का अध्ययन करना है। किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था को समझने के लिए उस देश के जीवन दर्शन शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक स्थिति के साथ–साथ उसके इतिहास एवं संस्कृति को जानना जरूरी है। ये स्थितियाँ उस देश की शिक्षा व्यवस्था को बनाने में अहम भूमिका तो निभाती ही है साथ वे उसकी शैक्षिक आकांक्षाओं का भी परिचायक होती है। जब हम शिक्षा व्यवस्था से किसी देश को समझने लगते हैं तो हमे ज्ञात होता है संसार के विभिन्न देशों की वैश्विक आकांक्षाओं और समस्याओं में काफी साम्य है। आज के भूमण्डलीकरण के इस दौर मे तो शैक्षिक आकांक्षाएँ तथा समस्याएँ और अधिक समान हो गई है। शिक्षा के बेहतर भविष्य के लिए विश्व के विभिन्न देशों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन करना जरूरी है।*

## मुख्य शब्द

*निर्देशन, अध्ययन, शिक्षा, सामाजिक.*

## प्रस्तावना

नए प्रवेशार्थियों के लिए अभिमुखीकरण कार्यकलाप किए जाने की आवश्यकता है ताकि वे नए पर्यावरण में भली–भांति समायोजित हो जाएँ और विषय सामग्री को स्वतंत्रतापूर्वक सीख सकें। यह कार्य समूह में और

व्यक्तिगत कार्यकलापों के माध्यम से किया जा सकता है, जैसे सभाएँ आयोजित करना, कक्षा वार्ताएँ आयोजित करना, विद्यालय विनिमयों और कार्यक्रमों पर चर्चा कराना तथा समायोजन में व्यक्तिगत सहायता उपलब्ध कराना। मानव संसाधन विकास हमारे सभी मानवीय कार्यकलापों का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है और इसी तरह यह शिक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण है। शिक्षा एक सशक्त क्षेत्र है जो मानव संसाधन विकास में सहायता करता है। विद्यालयों में व्यवस्थित निर्देशन कार्यक्रम के लिए एक पूर्णकालिक उपबोधक और अन्य साज सज्जा की आवश्यकता होती है परन्तु पूर्णकालिक उपबोधक के अभाव में, जैसा कि वर्तमान में हमारे विद्यालयों में होता है, वृत्तिक, उपबोधक और अध्यापक की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। यद्यपि वृत्तिम उपबोधक जो कि निर्देशन में प्रशिक्षित होता है फिर भी विद्यालयों में निर्देशन कार्यकलाप आयोजित करने में उसकी अपनी सीमाएँ होती हैं। निर्देशन और उपबोधन में प्रशिक्षित न होने के कारण अध्यापक की भूमिका भी बहुत सीमित हो जाती है।

## साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोधपत्र हेतु निर्मित परिकल्पनाओं का दत्त संकलन के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर निर्देशन तथा निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं का अध्ययन किया गया। इसके परिणाम निर्देशन के आधार पर पूर्व में हुए अलग–अलग शोधकार्यों के अनुक्रम में हैं।

**स्टीफेलरी बफोर्ड तथा स्टीवार्ट** ने निर्देशन के बारे में कहा है कि निर्देशन समस्या समाधान हेतु चयन एवं समायोजन निर्धारण हेतु एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को दी गयी सहायता है। निर्देशन का लक्ष्य ग्रहणकर्त्ता में अपनी स्वतंत्रता तथा अपने प्रति की भावना का विकास है। यह एक सार्वभौमिक सेवा है जो कि केवल शिक्षालय या परिवार तक सीमित नहीं है। यह जीवन के सभी पक्ष घर, व्यापार, उद्योग, शासन, सामाजिक जीवन, चिकित्सालय, कारागार में व्याप्त है, वास्तव में इसका अस्तित्व उन सभी स्थानों में है, जहाँ व्यक्ति है जो कि सहायता चाहते है और जहाँ ऐसे लोग हैं जो सहायता दे सकते हैं।

**मैथ्यूसन** ने परिभाषा में निर्देशन को क्रमबद्ध एवं व्यवसायिक सहायता की प्रक्रिया बताते हुए लिखा है, कि निर्देशन किसी व्यक्ति को शिक्षा एवं व्याख्यात्मक विधियों के द्वारा सहायता देने की क्रमबद्ध व्यवसायिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा उस व्यक्ति की विशेषताओं और शक्तियों को श्रेष्ठ ढंग से समझाया जा सके तथा उसे सामाजिक आवश्यकताओं और अवसरों के साथ सामाजिक और नैतिक मूल्यों के अनुसार संतोषजनक ढंग से जोड़ा जा सके।

निर्देशन को समायोजन में सहायता बताते हुए **हमरिन और ऐरिक्सन** ने निर्देशन को शैक्षिक कार्यक्रम का वह पक्ष बताया है। जो विशेष रूप से छात्र को उसकी वर्तमान परिस्थिति में समायोजित करने में और उसकी रुचियों, योग्यताओं और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार उसके भविष्य की योजना बनाने में सहायता करने से सम्बन्धित हो।

**जैन पारस** (2016) ने एक शोध इम्पैक्ट ऑव करियर गाइडेन्स एण्ड काउंसलिंग ऑन स्टूडेन्ट्स करियर डेवलपमेन्ट किया जो बतलाता है कि निर्देशित तरीके से चलने वाले विद्यार्थियों को सफलता और जीवन संतुष्टि प्राप्त होती है। जबकि मार्गदर्शन के बिना लिए गये निर्णय से असंतुष्टि प्राप्त होती है।

**प्रशान्त एवं मनीषा** (2015) ने रिलेशनशिप बिटविन परसिव्ड स्ट्रेस सेल्फ एस्टीम वे ऑव कॉपिंग एण्ड प्रोब्लेम सोल्विंग एबिलिटी अमोंग स्कूल गोईंग एडोलसेन्ट्स विषय पर अध्ययन किया और पाया कि स्कूल जाने वाले किशोरो के कथित तनाव, आत्मसम्मान और समस्या समाधान की क्षमता के बीच सार्थक संबंध मौजूद है।

**परवथ्य एवं पिल्लै** (2015) ने इम्पैक्ट ऑव लाइफ स्किल्स एजुकेशन ऑन एडोलसेन्ट्स इन रूरल स्कूल्स विषय का अध्ययन किया। इस अध्ययन के परिणाम केरला के इस तटीय विद्यालय के लड़कों और लड़कियों में जीवन कौशल शिक्षा के महत्त्वपूर्ण प्रभाव को दिखाते हैं।

**पुजर एवं अन्य** (2014) ने इम्पैक्ट ऑव इन्टरवेन्शन ऑन लाइफ स्किल डेवलपमेन्ट अमोंग एडोलसेन्ट गर्ल्स विषय पर शोध कार्य किया और पाया कि जीवन कौशल हस्तक्षेप देने के बाद विभिन्न जीवन कौशलों में एक

महत्त्वपूर्ण सुधार हुआ, और यह भी पाया गया कि जीवन कौशल शिक्षा ग्रामीण किशोरावस्था की लड़कियों को सकारात्मक कार्य करने तनाव और समस्या समाधान की क्षमता कौशल में सुधार करने में मददगार थी।

**प्रतिष्टा पुरोहित एवं सुशील कुमार मीणा** (2019) ने शहरी एवं ग्रामीण के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के वैयक्तिक निर्देशन संबंधी सेवाओं की दृष्टि समान बताई है।

## शोध उद्देश्य

सीकर शहर में विज्ञान एवं कला संकाय के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत् छात्र–छात्राओं की शैक्षिक निर्देशन संबंधी सेवाओं की आवश्यकताओं का अध्ययन करना है।

## शोध परिकल्पना

सीकर शहर में विज्ञान एवं कला संकाय के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की शैक्षिक निर्देशन संबंधी सेवाओं की आवश्यकताओं में सार्थक अंतर नहीं है।

## शोध विधि व उपकरण

शोधार्थी के द्वारा आँकड़ों व तथ्यों की आन्तरिक एवं बाह्य आलोचना करने के अन्तर्गत जो कार्य है, वह है संगृहीत आंकड़ों का समस्या के परिप्रेक्ष्य में व्याख्या एवं विश्लेषण करना इस संगृहीत आँकड़ों की तार्किक व सहायक क्रम में व्याख्या की जाती है। शोधार्थी को अपने आँकड़ों की परिसीमाओं से सन्तुष्ट होना चाहिए क्योंकि ऐतिहासिक आंकड़े सत्यापन रहित एवं अधूरे होते हैं इसलिए शोधार्थी में उच्च स्तरीय विद्वत्ता एवं कल्पनाशक्ति का होना बहुत जरूरी है, साथ ही व्याख्या करने के स्तर पर शोधकर्ता को स्वयं में सतर्क, निष्पक्ष व तटस्थ रहना भी बहुत जरूरी है क्योंकि आँकड़ों की व्याख्या करते समय उसके अपने पूर्वाग्रह धारणाएं व संस्कार, व्याख्या को प्रभावित कर सकते हैं।

अतः शोधार्थी को अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता बनाये रखने का प्रयत्न करना चाहिए साथ ही आँकड़ों के यथार्थ निष्कर्ष तक पहुंचने का प्रयत्न करना चाहिए। शोधकर्ता द्वारा आँकड़ों का विश्लेषण करते समय ऐतिहासिक कार्य कारण सम्बंध को प्रमाणित करना आवश्यक होता है। यह सरल कार्य नहीं है क्योंकि ऐतिहासिक अनुसंधान में कार्य कारण या तो पूर्व वृतांत के रूप में मिलते हैं या फिर अवशेष के रूप में जबकि वैज्ञानिक क्षेत्र में ये एक सीमाबद्ध रूप में प्रयुक्त होते हैं। मानव व्यवहार के पारस्परिक संबंध अत्यधिक जटिल होने के कारण ऐतिहासिक कार्य कारण अत्यधिक जटिल होते हैं। अतः शोधार्थी में मानव क्रियाकलाप व्यवहार एवं मनोविज्ञान की गहरी समझ होनी चाहिए तभी वह जटिल मानव व्यवहार की व्याख्या कर सकता है। कृष्ण कुमार के शब्दों में यह प्रायः संभव है कि एक ऐतिहासिक घटना और कई दूसरी घटनाओं को समानान्तर रखा जाये, जिसका आधार है इतिहास की पुनरावृत्ति लेकिन एक इतिहासविद को परिकल्पना के स्रोत के रूप में अनुरूपता के उपयोग में पर्याप्त सावधानी रखनी चाहिए। प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई है। शोधकर्त्ता द्वारा स्वनिर्देशन मापनी का प्रयोग किया गया है।

## शोध न्यादर्श

शोध न्यादर्श शोधकर्ताओं द्वारा इस शोधपत्र हेतु शोध न्यादर्श के रूप में सीकर शहर में विज्ञान एवं कला संकाय के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान एवं केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नई दिल्ली के अंतर्गत अध्ययनरत कुल 400 विद्यार्थियों कला संकाय एवं विज्ञान संकाय जो सीकर शहर में अध्यनरत है, को लिया गया है जो शोध न्यादर्श का प्रतिनिधित्व करते हैं।

## शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श विधि शोधकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत शोध में सरल यादृच्छिक प्रतिचयन विधि एवं संभावित प्रतिचयन विधि का उपयोग न्यादर्श पर किया गया है।

## प्रस्तुत शोध की परिसीमाएँ

- प्रस्तुत शोध सीकर शहर तक ही सीमित है।
- प्रस्तुत शोध केवल उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं तक ही सीमित है।
- प्रस्तुत शोध में राजस्थान बोर्ड एवं केन्द्रीय बोर्ड के विद्यालयों को लिया गया है।
- प्रस्तुत शोध में केवल विज्ञान व कला संकाय के विद्यार्थियों को लिया है।

### परिकल्पना 1

**तालिका संख्या 1:** मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि, मध्यमानों का अन्तर, स्वतंत्रता के अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन

| विद्यार्थी | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | अन्तर की मानक त्रुटि | मध्यमानों का अन्तर | स्वतंत्रता के अंश | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विज्ञान संकाय के छात्र | 100 | 52.4 | 2.41 | 0.46 | 0.54 | 372 | 0.112 |
| विज्ञान संकाय की छात्राएं | 100 | | | | | | |
| कला संकाय के छात्र | 100 | 51.36 | 2.69 | | | | |
| कला संकाय की छात्राएं | 100 | | | | | | |

*(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)*

## व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान एवं कला संकाय के विद्यार्थियों की निर्देशन मापनी के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 52.4 व 51.36 है तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 2.41 व 2.69 हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 0.46 है तथा मध्यमानों का अन्तर 0.54 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों का आलोचनात्मक अनुपात 0.112 है जो कि 372 स्वतंत्रता के अंश हेतु 0.54 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.76 से कम है। अतः परिकल्पना 1 स्वीकृत होती है अर्थात् सीकर शहर के विज्ञान एवं कला संकाय के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निर्देशन सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

यद्यपि कला संकाय विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान विज्ञान संकाय विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के मध्यमान से कम है लेकिन दोनों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। दोनों में जो भी अन्तर है, वह केवल संयोगवश ही है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान एवं कला संकाय के विद्यार्थी शैक्षिक निर्देशन सम्बन्धी सेवाओं की दृष्टि से समान होते हैं। उनके शैक्षिक निर्देशन सम्बन्धी सेवाओं के स्तर में कोई विशेष एवं सार्थक अन्तर नहीं होता है।

**लेखाचित्र संख्या 1:** सीकर शहर में विज्ञान एवं कला संकाय के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निर्देशन संबंधी सेवाओं की आवश्यकताओं के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता का लेखाचित्रीय प्रदर्शन

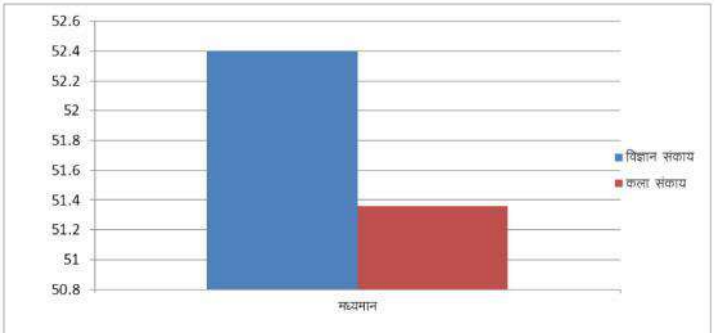

## परिणाम

शोधकर्ताओं द्वारा एकत्रित किए गए आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पाया गया कि सीकर शहर में विज्ञान एवं कला संकाय के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निर्देशन संबंधी सेवाओं की आवश्यकताओं की स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में शैक्षिक निर्देशन संबंधी सेवाओं में जो अंतर नजर आया वह अत्यंत कम है जो संयोगवश है जिसे नगण्य माना जा सकता है। अतः शोधकर्ता यह स्पष्ट रूप से कह सकता है कि सीकर शहर में विज्ञान एवं कला संकाय की उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निर्देशन संबंधी सेवाओं की आवश्यकता में कोई विशेष अंतर नहीं है।

## निष्कर्ष

सीकर शहर में विज्ञान एवं कला संकाय के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निर्देशन संबंधी सेवाओं की आवश्यकताओं में कोई विशेष अंतर नहीं है।

## सुझाव

- विज्ञान एवं कला संकाय के विद्यार्थियों को उनकी रूचि व्यक्ति की स्तर के अनुरूप निर्देशन सेवाओं में अवसर उपलब्ध कराने चाहिए।
- विज्ञान एवं कला संकाय के विद्यार्थियों को नियमित रूप से आवश्यकता अनुसार शैक्षिक निर्देशन देना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। अतः उनकी शैक्षिक की उपलब्धता में उन्नयन के लिए शैक्षिक निर्देशन देना चाहिए।
- शैक्षिक निर्देशन, कला व विज्ञान संकाय के छात्रों के आत्मविश्वास में वृद्धि करता है। अतः उन्हें समय–समय पर शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता महसूस होती है।
- शैक्षिक निर्देशन से विज्ञान व कला संकाय के विद्यार्थियों में आत्मानुशासन एवं स्वयं जैसे गुणों में वृद्धि होती है। अतः शैक्षिक निर्देशन आवश्यक है।
- कला एवं विज्ञान के विद्यार्थियों में शिक्षण के प्रति सकारात्मक के वैज्ञानिक सोच उत्पन्न करने के लिए उनकी शैक्षिक निर्देशन के लिए अनुभवी एवं विषय विशेषज्ञों से शैक्षिक निर्देशन की व्यवस्था करनी चाहिए।

## संदर्भ सूची

1. शर्मा, सुरेन्द्र (2007) : *रिसर्च मैथडोलॉजी– शैक्षिक परिप्रेक्ष्य,* नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
2. जायसवाल, सीताराम (2008) : *शिक्षा में निर्देशन और परामर्श,* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. गुप्ता एवं गुप्ता (2007) : *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन,* शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
4. मंगल, अंशु एवं अन्य (2004) : *शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, समंक विश्लेषण एवं शैक्षिक सांख्यिकी,* राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा।
5. गैरेट, एच.ई. (1981) : *मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी,* दशम् संस्करण, बी. एफ. एण्ड सन्स, बॉम्बे।

## Websits

6. https://www.google.com
7. https://www.wikipedia.com
8. https://slideshare.co.in
9. https://egyankosh.ac.in/

********